प्रास्ताविक :

साहित्य में अपने समय के यथार्थ का चित्रण होता है। समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं का वास्तविक अंकन करना साहित्य की जिम्मेदारी है। लोगों में जागृति निर्माण करके सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में भी साहित्य का योगदान रहा है। 'मातृदेवो भवः' के अनुपम उद्‌घोष से अनुप्राणित हमारी भारतीय संस्कृति में स्त्रियों का सदा से ही अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान रहा है और 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः' कहकर मनु ने उसके गौरव को द्विगुणित कर दिया है। नारी विधाता की अनुपम एवं सर्वोत्कृष्ट रचना मानी जाती है। उसमें करुणा, ममता, स्नेह, सहिष्णुता आदि गुण स्वाभाविक रूप से ही विद्यमान रहते हैं।

नर तथा नारी जीवन रूपी गाडी के दो पहिये हैं। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है, अस्तित्वहीन है। प्रत्येक मनुष्य की सफलता के पीछे किसी न किसी नारी का हाथ होता है। इसमें सन्देह नहीं। तुलसी को तुलसीदास बनाने का श्रेय उनकी पत्नी रत्नावली को है। रत्नावली के तिरस्कार ने ही तुलसीदास के अन्तःचक्षु खोलकर उन्हे ज्ञान का दिव्य प्रकाश दिखलाया और विश्वबन्धु बना दिया। कालिदास को विद्यात्तमा की उपेक्षा ने ही कालिदास को कवि कुलगुरु के गौरवमय पद को प्राप्त कराया और भी इस प्रकार के असंख्य उदाहरणों से हमारे भारत का अतीत भरा पड़ा है।

विद्यार्थी काल से ही मेरी हिन्दी साहित्य में रूचि रही है। मैंने हिन्दी साहित्य की अनेकों रचनाएँ पढ़ीं, उनमें से आधुनिक लेखिकाओं के साहित्य ने मुझे भीतर तक झकझोरा। क्योंकि नारी के सहज, सुलभ ग्रंथों की अभिव्यक्ति में पुरुष की अपेक्षा नारी

अधिक सफल रही है। कॉलेज काल के दौरान मैंने कृष्णा जी का साहित्य पढ़ा। एम. ए. का अध्ययन करते हुए साहित्य से गहरा रिश्ता जुड़ा तो प्रेमचंदजी, जैनेन्द्रजी एवं प्रसादजी आदि के साहित्य अध्ययन से दिन प्रतिदिन साहित्य में ज्यादा रूचि होने लगी और जब आधुनिक हिन्दी लेखिकाओं के साहित्य का अध्ययन किया तो उनके नारी पात्र मन की गहराई को स्पर्श कर गए। कृष्णा सोबती जी की रचनाओं ने मुझे काफी आकर्षित किया है। उनके नारी पात्रों को मैं प्रायः समाज के साथ जोड़कर ही पढ़ती आई हूँ।

जिन्दगी ने कई रंग बदले खुशी और गम दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। अनुभवों से इन्सान में एक परिपक्वता आ जाती है। उपन्यास पढ़ते समय मेरे दिल में हमेशा यह बात रही है कि आज के समाज में स्त्रियों की क्या स्थिति है ? उपन्यास इस दृष्टि से जीवन की तस्वीर को प्रस्तुत करने का सबसे बड़ा साधन है। मुझे शुरू से ही नारी समस्या के बारे में पढ़ना, उसका तर्क–वितर्क करना, समझना अच्छा लगता है। लेकिन मन में प्रश्न उठता है कि हर वक्त नारी के साथ ही ऐसा क्यों होता है। क्यों उसे ही हर बात में गुनहगार ठहराया जाता है ? क्यों वह अपने मन की नहीं सून सकती ? ऐसा क्यों ? साहित्य में जिन नारी पात्रों के बारे में पढ़ा उन सभी में ऐसा ही दिखाई देता है, और आज के आधुनिक युग में भी नारी की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं है। अतः मेरी इच्छा यही रही की नारी की समस्या को लेकर कुछ, मनोमंथन कर साहित्य के माध्यम से कुछ लिखना चाहती हूँ।

पिछले कई सालों से मैं आदरणीय गुरुवर्या डॉ. बिमलेश जी के संपर्क में रही हूँ। एम. फिल. की पदवी भी बिमलेश जी के मार्गदर्शन में ही प्राप्त की है। उनकी नियमितता, छात्र प्रेम, ज्ञान निष्ठा, अध्यापनकला, नित नया करने की, आगे बढ़ने की इच्छा तथा उनके बौधिक ज्ञान मैं हमेशा प्रभावित रही हूँ, और आज वीर नर्मद विश्वविद्यालय, सूरत ने मुझे

पीएच. डी. करने के लिए आदरणीय बिमलेश जी के मार्गदर्शन की अनुमति दी, इसके लिए मैं विश्व विद्यालय की बहुत आभारी हूँ।

स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिन्दी महिला उपन्यासकारों में जिन नामों का अपना अलग साहित्यिक रूतबा है उनमें कृष्णा सोबती जी का नाम अग्रणी है। हिन्दी कथा जगत में जिन्होंने अपने लेखन के बल पर तहलका मचा दिया उन चुनिंदा लेखिकाओं में कृष्णा जी का स्थान महत्त्वपूर्ण मानना होगा। अनेकविध विषयों तथा विधाओं में लेखन कर उन्होंने अपनी मेघावी प्रतिभा का परिचय दिया है। कृष्णा सोबती के उपन्यासों का केन्द्रबिन्दु नारी जीवन है। मेरे शोध प्रबंध का विषय है – '**कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी की समस्याएँ**।'

मैंनें अपने शोध–प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है। अध्ययन की सुचारू सुविधा हेतु उसका संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया है, जो इस प्रकार है :

प्रथम अध्याय : कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व और कृतित्व

द्वितीय अध्याय : उपन्यास कला का परिचय, प्रकार और आधुनिकता

तृतीय अध्याय : कृष्णा सोबती के उपन्यासों का परिचय

चतुर्थ अध्याय : कृष्णा सोबती के उपन्यासों में व्यक्त नारी

पंचम् अध्याय : कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी की समस्याएँ

षष्ठ अध्याय : कृष्णा सोबती के उपन्यासों की भाषा–शैली

– उपसंहार

प्रकरण संक्षिप्ति

प्रथम अध्याय

कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व और कृतित्व

किसी युग और किसी भी भाषा में एक–दो लेखक ही ऐसे होते हैं, जिनकी रचनाएँ साहित्य और समाज में घटना की तरह प्रकट होती है। हिन्दी साहित्य के ऐसे नामों में कृष्णा सोबती सहज ही याद आ जाती है। प्रस्तुत अध्याय में कृष्णा सोबती जी का जीवन परिचय अर्थात् जन्म, शिक्षा, पुरस्कार एवं सम्मान, परिवार, वेशभूषा, खान–पान, लेखन और स्वभाव आदि का संक्षिप्त विवेचन किया है। कृष्णा सोबती ने अपने लेखन और जीवन दोनों में से किसी से भी समझौता नहीं किया।

कलाकार को समझने के लिए उसके द्वारा प्रस्तुत कलाकृति का अध्ययन आवश्यक है। हर कलाकार अपने सुख–दुःख के क्षणों को एक धागे में पिरोकर प्रस्तुत करता है। अर्थात् साहित्यकार का व्यक्तित्व उस कृति के माध्यम से उजागर होता है। इसलिए कृष्णा सोबती के उपन्यासों का अध्ययन, विश्लेषण करने से पहले व्यक्तित्व का अंकन करना अनिवार्य है।

कृष्णा सोबती का जन्म पंजाबी परिवार में हुआ था। उनके पिता बेहद अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे। अतः कृष्णा सोबती के साहित्य पर उनके पिताजी की प्रेरणा विशेष रही है। साथ ही कृष्णा जी अपनी माँ और नानीजी के खूब करीब रही हैं जिसका प्रभाव उनके द्वारा रचित ‘ए लडकी’ और ‘सिक्का बदल गया’ किताबें बयान करती हैं। कृष्णा सोबती की जिन्दगी एक पहेली है। २२ या २३ वर्ष में ही उन्होंने नौकरी करके अपना खर्च निकाला

और अपने परिवार का उदर निर्वाह किया है। आज वे जिन्दगी से जुड़ी हुई भी है और दूर भी है। अपने घर 'पूर्वाशा' में वे अकेली रहती हैं। जिन्दगी में अकेले रहने का फैंसला उनका खुद का अपना था। वे अकेली रहती है, अपनी मर्जी से जिन्दगी जीती है, शायद उन्हें भीड़ पसन्द नहीं, उन्हें अपने आप से लगाव है, अपनी सुन्दरता से लगाव है, अतः वे एकांत प्रिय हैं।

कृष्णा सोबती हिन्दी साहित्य की उन चंद कालजयी रचनाकारों में से एक है, जिनका सम्मान बढ़ती उम्र के साथ घटा नहीं बल्कि बढ़ा है। कृष्णा जी की जिन्दगी एक पहेली है। उनका जीवन साधारण होते हुए भी असाधारण है। कृष्णा सोबती का समृद्ध व्यक्तित्व और स्वस्थ लेखन ही उनके सफल जीवन का परिचायक है। अपने जिंदादिल व्यक्तित्व से मनुष्य के यथार्थ जीवन की पीड़ा और दर्द को वे गहराई से लिखती हैं। इसी कारण उनका लेखन पाठकों के मर्म को छूता है। कृष्णा जी अपने आप में मग्न रहती हैं।

कृष्णा सोबती का कृतित्व बहुआयामी है। कृष्णा जी ने मुख्यतः उपन्यासों का लेखन किया है। किन्तु उन्होंने उपन्यास के साथ साथ कहानियाँ, संस्मरण, कविताएँ तथा साहित्यिक लेख आदि का लेखन किया है। इससे स्पष्ट है कि उनका कृतित्व विविधताओं से विभूषित है। कृष्णा सोबती जी की प्रत्येक रचनाओं में से एक सा जीवन लक्षित होता है। उनकी रचनाओं का प्रमुख प्रेरणा श्रोत या उद्‌गम स्थान उनका अपना परिवार ही रहा है। उनकी आज तक की हर रचना में कहीं न कहीं सहज रूप से उनका अपना स्वत्व दिखाई देता है। उन्होंने अपनी साहित्यिक सफर की शुरूआत कहानी विधा से की है। उन्होंने अपने साहित्य में औरत को नए जमाने के साथ बदलते रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार इस अध्याय में कृष्णा सोबती के जीवन कालीन कृतित्व का आलेखन किया गया है।

द्वितीय अध्याय

उपन्यास कला का परिचय, प्रकार और आधुनिकता

इस अध्याय में उपन्यास की परिभाषा, उपन्यास के प्रकार, उपन्यास के तत्त्व, उपन्यास के विषय वैविध्य, युगीन परिस्थितियाँ, आधुनिक बोध आदि मुद्दों को सम्मिलित किया गया है। प्रारंभ में उपन्यास कला का परिचय दिया गया है। उपन्यास की परिभाषा, उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति, उपन्यास शब्द का सर्वप्रथम शब्द प्रयोग के बारे में विवरण दिया गया है। उपन्यास को लेकर विविध विद्वानों के मत प्रस्तुत किये गये हैं। जिनमें भारतीय विद्वानों में श्यामसुंदर दास, प्रेमचन्दजी, जैनेन्द्रजी और पाश्चात्य विद्वानों में राल्फ फोक्स, पोप आदि के मत प्रस्तुत किये गए हैं। इसके साथ–साथ उपन्यास कला की विकास यात्रा कालक्रम के आधार पर प्रस्तुत की गई है। जैनेन्द्रजी के मतानुसार – “उपन्यास में केवल जो है वही चित्रण नहीं होता बल्कि ‘जैसा होना चाहिए’ इसका भी चित्रण किया जाता है।” विविध विद्वानों के मतानुसार उपन्यासो के प्रकारो की चर्चा की गई है। कृष्णा सोबती का उपन्यास ‘डार से बिछुडी’ पंजाब प्रदेश के आँचलिक जीवन पर आधारित है। ‘जिन्दगीनामा’ उपन्यास भी आँचलिक उपन्यास है। आँचलिक उपन्यासों में कृष्णा सोबती का विशेष योगदान है। कृष्णाजी का ‘समय सरगम’ उपन्यास सामाजिक उपन्यास है। इस अध्याय में आगे उपन्यास के तत्त्व, उपन्यास का प्रयोजन, उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, उपन्यास का विषय, उपन्यास में युगीन समस्याएँ देखें तो नारी की समस्या, सामाजिक समस्या, महिला शिक्षा आदि का विवेचन किया है।

इसके साथ इस अध्याय में उपन्यास विधा में कृष्णा सोबती का स्थान प्रस्तुत किया है। कृष्णाजी ने मुख्यतः उपन्यासों का लेखन किया है। उनके उपन्यास हमें बताते हैं कि यह

है भारतीय नारी की जिन्दगी। कृष्णाजी ने बहुत कम लिखा है। उनके विगत चार–चार दशकों के साहित्य सफर में केवल छः उपन्यास आए हैं। अपितु उपन्यास के शिल्प, पात्र, संयोजना, विषय सब अपने आप में इतने विस्तृत है की उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर भारत के हर पहलु को छुआ है। समकालिन हिन्दी उपन्यासकारों में कृष्णाजी का स्थान अव्वल है। इस प्रकार इस अध्याय में इन सब बातों का विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय

कृष्णा सोबती के उपन्यासों का परिचय

इस अध्याय में कृष्णा सोबती के सभी उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। कृष्णाजी ने अपने उपन्यासों में तत्कालीन समाज के रीति–रिवाजो, रूढ़ियों, लोकगीतों और लोककथाओं का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत किया है। कृष्णा सोबती नारी स्वतंत्रता की प्रबल समर्थक है। अपने उपन्यासों में सामाजिक रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों का खण्डन करते हुए प्रगतिशील विचारों का प्रसार–प्रचार कर समाज सुधार करना अपना प्रधान लक्ष्य रहा है।

हिन्दी साहित्य को अधिक समृद्ध करने में अपनी वैविध्यपूर्ण रचनाओं द्वारा महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाली कृष्णा जी अपने छः उपन्यासों के जरिए अधिक प्रसिद्ध हुई है और इसलिए हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक उपन्यास लेखिका के रूप में अधिक जानी जाती है।

'डार से बिछुडी' कृष्णा जी की प्रथम प्रकाशित और औपन्यासिक रचना है। उपन्यास की प्रमुख पात्र पाशो एक बार डार से बिछुड गई तो बहुत सारे कंटीले रास्तों, पगडंडियों से उसे गुजरना पड़ा था। पाशो जिन जिनके हाथों में पड़ी उन हाथों से अपनी दुर्गति कराती रही।

'मित्रो मरजानी' सोबती जी की साहित्य रचना की प्रथम परिपक्व कृति माना गया है। मित्रो मरजानी जैसा नारी पात्र प्रायः समूचे हिन्दी कथा साहित्य में दुर्लभ है। अपनी मांसल कथावस्तु, प्रणिक संवेदना और जीवन्त भाषा शिल्प के लिए यह कथाकृति अत्याधिक चर्चित रही है।

'सूरजमुखी अंधेरे के' का विषय आधुनिकता बोध पर आधारित है। यह अधिक ठहरा हुआ और संयत उपन्यास लगता है, यहाँ कृष्णा जी की नारी एक खतरनाक दिशा की ओर मुड़ती दिखाई देती है। यह उपन्यास रत्ती की कथनी कहता है। शैशव काल में किसी अजनबी ने उस पर बलत्कार किया था।

'जिन्दगीनामा' केन्द्रीय अकादमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास है। इसमें विभाजन पूर्व पंजाब की धड़कती जिन्दगी है। इसका कथानक खेतों की तरह फैला सीधा–सादा और धरती से जुड़ा है।

'दिलो–दानिश' वकील कृपानारायण के दिल अर्थात् भावना और दानिश अर्थात् बुद्धि की कहानी है। या दिल महकबानो और दिमाग कुटुम्बप्यारी से मिलते झूझते, उकसाते वकील कृपानारायण की कहानी है।

'समय सरगम' उपन्यास में वृद्धों की दुनिया का ऐश्वर्य लोक रचने की कोशिश है। इस उपन्यास में अरण्या और ईशान की जुगलबंदी भी है और आत्म संवाद भी है। कृष्णा जी हर बार एक नया विषय और भाषिक मिजाज लेकर आती है। इस अध्याय में कृष्णा जी के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में व्यक्त नारी

इस अध्याय में भारतीय समाज व्यवस्था में नारी की स्थिति का चित्रण किया गया है। स्त्रियों की स्थिति भिन्न–भिन्न कालों और समाजों में भिन्न–भिन्न प्रकार की रही है। मध्ययुग में स्त्री को शिक्षा से हाथ धोना पड़ा। ब्रिटिश काल में अंग्रेजों के आगमन से न केवल शिक्षा के क्षेत्रों में बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी काफी परिवर्तन हुआ। इस काल में नवजागृति की लहर सी उठ गई। इन सभी बातों पर प्रकाश डाला गया है। समाज सुधारकों के सहयोग से स्त्री शिक्षा को बल मिला है। नारी को विविध रूपों में से गुजरना पड़ता है – बालिका, किशोरी, युवती, बेटी, बहन, प्रेमीका, माता, विधवा, वेश्या इत्यादि।

समय एवं समाज के साथ नारी का रूप परिवर्तन होता रहता है। अतः आज 'अबला' नारी के स्थान पर 'सबला' नारी की स्थापना हो चुकी है। कृष्णा जी के उपन्यासों में स्थापित नारी के विविध पात्रों, रूपों का आलेखन किया गया है। कृष्णा जी के ज्यादातर उपन्यासों का कथानक उनके नारी पात्रों के इर्द गिर्द घुमता हुआ नजर आता है। 'डार से बिछुडी' उपन्यास में मुख्य नारी पात्र या नायिका पाशो है। इसके अलावा पाशो की माँ, नानी, पाशो की भाभी आदि पात्र है। 'मित्रो मरजानी' चरित्र प्रधान उपन्यास है और पात्रों के मनोविश्लेषण के माध्यम से ही उपन्यास का उद्देश्य समझा जा सकता है। 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास में नारी पात्रों की संख्या कम है या फिर मुख्य नारी पात्र एक है रत्ती, जिसके इर्दगिर्द पूरा उपन्यास रचा गया है।

'जिन्दगीनामा' उपन्यास में शाहनी, राबया आदि नारी पात्रों का अंकन किया गया है। 'दिलो–दानिश' उपन्यास में कृष्णा जी नारी को परम्परानुमोदित दृष्टि से देखने का

आग्रह नहीं करती। उसे जायदाद रूप में मिले संस्कारो और वर्जनाओं से मुक्त मानवीय संदर्भो में देखने का प्रयास करती है। इसमें महकबानो, कुटुम्बप्यारी, मासूमा आदि नारी पात्रों का अंकन किया गया है। 'समय सरगम' उपन्यास के अंतर्गत आनेवाले नारी पात्रों में अरण्या, दमयंती और कामिनी है।

सामंती युग में नारी केवल भोग्या बनकर रह चुकी थी। वह पुरुषों के हाथों का खिलौना थी। अर्थात् स्वातंत्र्य पूर्वकालीन नारी की स्थिति दयनीय तथा सोचनीय थी। आज की नारी स्वयं के अस्तित्व बोध के प्रति सचेत परिलक्षित होती है।

इस अध्याय में कृष्णा जी के उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध रूपों का अत्यंत बारीकी से और गहराई से विवेचन–विश्लेषण किया गया है।

पंचम् अध्याय

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी की समस्याएँ

इस अध्याय में कृष्णा सोबती के उपन्यासों में व्यक्त नारी जीवन से सम्बन्धित विविध समस्याओं का अंकन किया गया है। आज का युग विषमता और समस्याओं का युग है। समस्याएँ निरन्तर जन्म लेती है, बढ़ती है एवं अबाध गति से चलती है। कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी जीवन से सम्बन्धित विविध समस्याएँ चित्रित है। अकेलेपन की समस्या – 'बालोः मित्रो मरजानी' उपन्यास में इस समस्या का उल्लेख मिलता है। संतानहिन होने की समस्या – 'मित्रो मरजानी', 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'जिन्दगीनामा' में सन्तान प्राप्ति की समस्या का अंकन किया गया है। 'समय सरगम' उपन्यास में वृद्धावस्था की समस्या का अंकन देखने को मिलता है। विवाह की समस्या, घर से बेघर होने की समस्या, आत्महत्या

की समस्या, शोषण की समस्या, अज्ञान की समस्या, नारी विक्रय की समस्या, अधिकार से वंचित नारी की समस्या, यौन सम्बन्ध की समस्या, घर से बेघर होने की समस्या आदि। विवेच्य उपन्यासों में नारी की विवाह विषयक अनेक समस्याएँ दृष्टिगोचर होती है। दहेज समस्या से भी आज की नारी पीड़ित नजर आती है। स्त्री विधवा हो तो उसके पुनर्विवाह में बाधा डाली जाती है। 'दिलो–दानिश' की छुन्ना और बुआ और 'जिन्दगीनामा' की महरी चाची का जीवन इसका सबूत है। विवेच्य उपन्यासों में मनोरूगण नारी की समस्या भी प्रस्तुत है। कुंठित स्त्री न किसी को संपूर्णतया से पाती है, न किसी को अपने को दे पाती है। कुंठा के कारण वह मनोरूग्ण बन जाती है। 'सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्ती इसका उदाहरण है।

इस प्रकार इस अध्याय में नारी जीवन से सम्बन्धित विविध समस्याओं का मूल्यांकन किया गया है।

षष्ठ अध्याय

कृष्णा सोबती के उपन्यासों की भाषा–शैली

लेखन की भाषा हर रचनाकार के साथ विभिन्नता लिए होती है। इसलिए हर रचनाकार की अपनी अलग भाषा होती है। इस अध्याय में मैंने कृष्णा सोबती के उपन्यासों की भाषा–शैली का चित्रण किया गया है। कृष्णाजी की भाषा बोलचाल की सहज भाषा रही है। कला की अभिव्यक्ति के लिए भाषा एक अनिवार्य साधन है। भाषा में इतनी सक्षमता और विलक्षणता होती है कि वह पात्रानुरूप अपना कलेवर बदल लेती है। इस प्रकार की भाषा के महत्त्व को वर्णित किया गया है।

कृष्णाजी की भाषा अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्तर पर अनुरूपता का परिचय देती है। इनके उपन्यासों की भाषा सचोट और सम्प्रेषणीय है। वह मन के अनुकूल सार्थक शब्दों से नियोजित है।

अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी के शब्द और वाक्य उनकी औपन्यासिक कृतियों की भाषा में घुल–मिल गए हैं। कई अंग्रेजी शब्दों का हिन्दीकरण भी प्रयुक्त किया गया है। वर्णन के दौरान पात्रों की मानसिकता और प्रसंगो की अनुकूलता का लेखिका ने पूरा ध्यान रखा है। इनकी भाषा में रोचकता, प्रवाहमयता, स्वाभाविकता आदि गुणों का समावेश हुआ है। संवेदना और भावुकता की अतिशयता में व्यक्ति काव्यात्मक भाषा का प्रयोग करता है। कृष्णाजी की भाषा, शब्दप्रयोग, ध्वनियुक्त, लयात्मक, चित्रात्मक, अर्थबोध, प्रभावोत्पादक एवं चमत्कारक वाक्य–विन्यास, अलंकारों का प्रयोग, मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग, काव्यात्मकता, भाषा की भाव प्रवणता, वाक्य, विराम चिह्न, अनुच्छेद आदि विषयों से परिपूर्ण इनके उपन्यासों में दोहरे शब्द, अंग्रेजी के शब्द, देशज शब्द और अरबी–फारसी शब्दों का प्रयोग मिलता है। इस प्रकार कृष्णाजी के उपन्यासों में प्रयुक्त भावानुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा का वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

उपसंहार :

शोध–प्रबन्ध के अंतिम चरण उपसंहार में कृष्णाजी के उपन्यासों के नारी पात्रों की समस्या का निचोड़ प्रस्तुत किया गया है। साथ–साथ हिन्दी साहित्य में उनके योगदान पर प्रकाश डाला गया है। उसमें संदेह नहीं कि कृष्णाजी का ज्यादातर साहित्य 'नारी' से जुड़ा है और क्यों न जुड़े ? वे भी तो एक नारी ही हैं। उनके उपन्यासों में विभिन्न वर्गों के तथा विभिन्न रूपों के नारी पात्र सहज समा गये हैं।

कृष्णा जी के उपन्यासों में व्यक्त नारी समस्याओं में भले ही अलग अलग स्थानों और परिवेश में नारियों का चित्रण किया हो, किन्तु वे एक दूसरे से भिन्न नहीं है बल्कि वे एक ही नारी का क्रमशः होता विकास है, बस नाम बदल गये। जहाँ पाशो एक चीज या वस्तु है। वही रत्ती और मित्रो में नारी व्यक्तित्व क्या है वह खोजने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई है, तो महकबानो में वह अस्तित्व के लिए लड़ती दिखाई देती है। आरण्या में वह एक व्यक्ति संपन्न नारी दिखाई देती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि कृष्णा सोबती की नारी चीज या वस्तु से, व्यक्ति और व्यक्ति से तथा व्यक्ति संपन्नता से अपना सफर तय करती हैं।

इस शोध–प्रबन्ध के माध्यम से कृष्णा सोबती के कथा–साहित्य में व्यक्त नारी और नारी समस्या का सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन करने का विनम्र प्रयास किया गया है। कृष्णाजी के जीवन–कवन से लेकर उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान, उनकी भाषाशैली, उनके नारी पात्रों की विविध समस्याओं का निचोड़ प्रस्तुत करने का निष्ठापूर्वक प्रयास किया है।

यह शोध–प्रबन्ध को तैयार करने में जिन पुस्तकों की सहायता ली गई है, उसकी संदर्भ सूची प्रस्तुत करके शोध–प्रबन्ध का कार्य पूर्ण किया है।

स्थल : निझर, **(योगिता सी. पटेल)**

दिनांक : –०८–२०१३ **अध्येत्री**

(डॉ. बिमलेश ए. तेवतिया)

निर्देशिका